

5. भारतीय विद्यार्थी

—माखनलाल चतुर्वेदी

समय जगाता है हम सबको, झटपट जग जाना ही होगा ;
देख विश्व-सिद्धान्त कार्य में, निर्भय लग जाना ही होगा ।
दृढ़ करके मस्तिष्क मनस्वी बनकर, वीर कहाना होगा,
पूर्व ज्ञान-सर्वेश चरण पर, जीवन पुष्प चढ़ाना होगा,
यह स्वार्थी संसार एक दिन, बनें हमीं से जब परमार्थी,
तब हम कहीं कहा सकते हैं, सच्चे भारतीय विद्यार्थी ।
ब्रह्मचर्य-व्रत भीष्मपितामह को आगे रख धर रहे हों,
वीर तेज में अर्जुन बनकर, दुर्जन दल को मार रहे हों ।
सादेपन में हो सतीक्ष्ण, पागल-से पण को पाल रहे हों,
न्याय-नीति में विदुर-सरीखे, तीखे वाक्य निकाल रहे हों ।
कर्मक्षेत्र हमको मिल जावे, हों बस इसी बात के प्रार्थी,
ऋषियों की सन्तान वही है, अद्भुत भारतीय विद्यार्थी ।
सीख रहे हों पश्चिम से कर्मस्थल में मरने के गुण,
नैतिक छान-बीन की दृढ़ता मर्मस्थल में धरने के गुण ।
हृदय, हाथ, मस्तिष्क मिलाकर, कर्मस्थल जय करने के गुण,
अपनी कार्य शक्ति से दुनिया भर के मन वश करने के गुण ।
वे ही माता के रक्षक, वे ही हैं सच्चे शिक्षार्थी,
वे ही हैं लक्ष्यों के लक्षक, प्यारे भारतीय विद्यार्थी ।
जीवन-रण में वीर पधारो, मार्ग तुम्हारा मंगलमय हो,
गिरि पर चढ़ना, गिर कर बढ़ना तुमसे सब विघ्नों को भय हो ।
नेम निभाओ, प्रेम बढ़ाओं, शीश चढ़ा भारत उद्धारो,
देवों से भी कहला लो यह, विजयी भारतवर्ष पधारो ।
भारत के सौभाग्य-विधाता, भारत वर्ष के आज्ञार्थी,
भारत विजय-क्षेत्र में जाओ, प्यारे भारतीय विद्यार्थी ।

* अभ्यास *

1. समय विद्यार्थियों को क्या सिखाता है ?
2. कवि ने किन-किन महापुरुषों के अनुकरण के लिए विद्यार्थियों को संदेश दिया है ?
3. पश्चिम से विद्यार्थी को क्या सीखना चाहिए ?